प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

दूसरों का कल्याण करना बड़ा धर्म है – आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 26 जुलाई, 2010

आदमी जीवन में पापकर्म कर लेता है। भोगारत हो जाता है पाप करने में रस भी आता है जिस तरह से मधु रस का स्वाद आता है वैसे ही उसे रस आ जाता है। जब तक पाप कर्म का उदय नहीं आता तब तक उसे रस आता है। हंसते हुए जो रस लेता है फिर उसे रोने पर भी पापकर्म से छुटकारा नहीं मिलता है अर्थात जो कर्म किया उसे भोगे बिना उसे छुटकारा नहीं मिल सकता।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ भवन में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने आगे कहा कि पाप कर्म से बचने के लिए अनुकंपा का भाव होना चाहिए, अनुकंपा का विकास करना चाहिए, अहिंसा प्रामाणिकता, संयम की भावना पुष्ट हो जाती है तो वह पापकर्म के बंध से मुक्त हो जाता है। दूसरों का कल्याण करना बड़ा धर्म है और दूसरों को पीड़ा देना इससे ज्यादा अधमता नहीं हो सकती है। जिस व्यक्ति में अनुकंपा की चेतना जागती है तो वह दूसरों को कष्ट नहीं देता जहां स्वार्थ की वृत्ति होती है वहां दूसरों का अस्तित्व भी छीन लेता है।

आचार्यश्री ने कहा कि एक समूह में रहना वाला व्यक्ति यह प्रयास करे कि परिवार में सामंजस्य रहे, परिवार में धार्मिक आध्यात्मिक विकास हो इसके प्रति जागरूकता रखनो चाहिए का विकास कैसे हो इस पर चिंतन होना चाहिए। जहां आर्थिक विकास है उसके साथ नैतिकता भी विकास होना चाहिए, आध्यात्मिक विकास होना चाहिए। आर्थिक विकास के साथ नतिकता का विकास नहीं है तो केवल भौतिक विकास ही अच्छा नहीं हो सकता। मनुष्य में प्रामाणिकता, सच्चाई के प्रति निष्ठा होनी चाहिए। सौंदर्य के साथ सच्चाई भी होनी चाहिए। सच्चाई जीवन में रहे।

इस अवसर आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के कोषाध्यक्ष राजकरन सिरोहिया ने आचार्यश्री महाश्रमण को पावस प्रवास की बुकलेट व कलैण्डर भेंट करते हुए जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

– शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)